नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मुंबई हमला : अब न्याय मिलने की उम्मीद

26 नवंबर 2008 में हुए मुंबई हमले के 166 मृतकों की आत्मा को शांति और उनके परिजनों को न्याय मिलने की अब उम्मीद जगी है. दरअसल, 26/11 मुंबई हमले के मास्टर माइंड तहव्वुर राणा को 15 साल की कानूनी लड़ाई के बाद अमेरिका से भारत लाना कोई साधारण घटना नहीं है. तहव्वुर राणा मुंबई हमले की साज़िश का बड़ा राज़दार है. उसे सब पता है कि पाकिस्तानी सेना के कौन-कौन से अफसर इस साजिश में शामिल थे, लश्कर-ए-तैयबा ने कैसे साजिश को अमली जामा पहनाया और उसमें डेविड कोलमैन हेडली का रोल क्या था. तहव्वुर राणा पाकिस्तानी मूल का कनाडियन नागरिक है. वो पाकिस्तानी सेना में डाक्टर रह चुका है. 1990 में कनाडा गया, फिर अमेरिका में बस गया.

अमेरिका में उसकी मुलाकात डेविड कोलमैन हैडली से हुई. डेविड हेडली का असली नाम दाऊद गीलानी है. वो भी पाकिस्तानी मूल का अमेरिकी नागरिक है. तहव्वुर राणा ने शिकागो में फर्स्ट वर्ल्ड इमिग्रेशन कंसलटेंसी कंपनी खोली और इस कंपनी के जरिए दुनिया भर में लश्कर के आतंकी हमलों को अंजाम देने लगा. डेविड कोलमैन हेडली तहव्वुर राणा की कंपनी का ऑफिस खोलने के बहाने मुंबई आया, हेडली ने मुंबई के उन जगहों की रेकी की, उनके नक्शे पाकिस्तानी सेना और लश्कर के आतंकवादियों को भेजे, जिनके आधार पर 26/11 के हमले के टारगेट सेट किए गए और इन्ही जगहों पर पाकिस्तानी आतंकवादियों ने 26 नवंबर 2008 को 166 बेगुनाहों का कत्ल किया, जिनमें 6 अमेरिकी नागरिक भी थे. तहव्वुर राणा को भारत लाने के लिए मोदी सरकार को पूरी ताकत लगानी पड़ी.

नरेंद्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तभी से उन्होंने बार-बार कहा है कि पाकिस्तान को उसी की भाषा में जवाब देना चाहिए. प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री मोदी ने ये करके दिखाया है. पाकिस्तान को उसी के घर में घुसकर मारा, बालाकोट स्ट्राइक की, एयर स्ट्राइक की और जम्मू कश्मीर में धारा 370 हटाकर पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया. पाकिस्तान की हालत ये कर दी कि एक-दो देशों को छोड़कर पूरा मुस्लिम विश्व भारत के पक्ष में खड़ा है. इसके विपरीत पाकिस्तान में गृह युद्ध जैसे हालात हैं. हर थोड़े दिन में खबर आती है कि किसी ने पाकिस्तान में आतंकवादी को मार गिराया. अब पाकिस्तान रोता है कि हर कोई उसके घर में घुसकर मार रहा है. दरअसल,जब से नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं, उन्होंने आतंकवाद का सफाया किया है, जो जहां है उसे वहां सबक सिखाया.इस बात का असर आज दिखाई देता है. अब पहले की तरह आतंकवादी हमले नहीं होते. बहरहाल, अब इस बात में तिल मात्र की शंका नहीं होनी चाहिए कि तहव्वुर राणा को उसके पाप की सज़ा मिलेगी और जल्दी मिलेगी. उसे या तो मरते दम तक उम्र कैद या फिर फांसी पर टंगा जाएगा. दरअसल, प्रत्यार्पण संधि में अलग-अलग देशों के हिसाब से शर्तें होती हैं. यदि संधि वाले दूसरे देश में फांसी का कानून नहीं है तो फिर भारत अपने यहां फांसी का कानून होते हुए भी मौत की सजा नहीं दे सकता. हालांकि इस केस में भारत और अमेरिका दोनों देशों में मौत की सजा का प्रावधान होने के कारण तहव्वुर राणा को यदि अदालत सजा देती है तो फांसी पर टांगा जा सकता है.

पवनसुत हनुमान की राम के प्रति समर्पित भक्ति

आशा जाकड़

हिंदू धर्म में श्री राम भक्त हनुमान शिव जी के अवतार माने जाते हैं। मान्यता है कि हनुमान का जन्म श्री राम की सहायता के लिए हुआ था। त्रेता युग के अंतिम चरण में श्री राम का अवतार राक्षस राज रावण का अंत करने के लिए हुआ था। उनके अलावा अनेक देवताओं के अंश से महावीर वानरों ने जन्म लिया। हनुमानजी ऐसे ही एक वीर थे जो वायु देवता के अंश से जन्मे थे ।वह रुद्र अवतार बताए जाते हैं ।

हनुमान मजबूत पेड़ थे तो भगवान राम सूर्य थे। हनुमान को श्रीराम की जरूरत थी ।उन्हें महान बनाने के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन व साथ की जरूरत थी ।भगवान राम के बिना वे सिर्फ पवन देव से प्राप्त शक्तियों और भगवान ब्रह्मा और इंद्र जैसे अन्य देवताओं के वरदान के रूप में एक विशेष बंदर थे।

हनुमानजी भगवान राम के प्रति समर्पित थे क्योंकि वे उनके प्रति निष्काम भक्ति रखते थे। हनुमान जी ने राम की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया था ।वे हर मुश्किल में श्री राम के साथ खड़े रहे ,उनकी सेवा में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी ।

राम के प्रति समर्पित गुण-

1-निष्काम भक्ति -हनुमान की भक्ति निष्काम व निःस्वार्थ भाव थी ।उनके जीवन का उद्देश्य राम के लिए ही जीना था

2-अटूट विश्वास और समर्पण -हनुमान जी ने राम के प्रति अटूट विश्वास और समर्पण का परिचय दिया था।

3-विनम्रता-हनुमानजी असीम शक्तियों के बावजूद हमेशा विनम्र रहे कभी अहंकार नाम मात्र को नहीं किया।

4-अद्वितीय प्रेम-श्री राम के प्रति उनका गहरा प्रेम था कि उन्होंने हृदय चीर कर दिखाया कि श्री राम और सीता उनके हृदय में है।

हनुमान जी एकमात्र ऐसे स्वरूप हैं जो किसी भी कार्य में कभी असफल नहीं हुए इसीलिए पवन पुत्र अपने इन्हीं गुणों के कारण राम जी को अति प्रिय थे। हनुमान जी की ये गुण हमारे जीवन में बड़ा बदलाव लाने की शक्ति रखते हैं।

असंख्य बाधाओं को पार कर लंका पहुँचना, माता सीता को अपने रामदूत होने का विश्वास दिलाना , लंका को जलाना यह उनके अनुपम साहस का परिणाम है।

कपि के वचन सप्रेम सुनि उपजा मन विश्वास

जाता मन क्रम वचन यह कृपा सिंधु कर दास 5-विनम्रता के साथ बुध्दिबल-

सुरसा नाम की राक्षसी समुद्र के ऊपर से निकलने वाले को हानि पहुंचाने के लिए कुख्यात थी। हनुमान जी जब समुद्र के ऊपर से गुजरे तो सुरसा ने उन्हें पकड़ना चाहा। हनुमान जी ने अपना रूप विस्तार किया विस्तार किया तो सुरसा ने भी अपना रूप विस्तार किया ।तब हनुमान जी ने अपना रूप छोटा कर दिया और सुरसा के मुख से बाहर निकल आए ।हनुमान जी की बुद्धिमत्ता से सुरसा राक्षसी प्रभावित हो गई और उन्हें जाने के लिए मार्ग दिया ।

6-सम्मान के प्रति समर्पण भाव -श्री राम के प्रति हनुमान जी के हृदय में अपार श्रद्धा थी और सम्मान के प्रति समर्पण का भाव अतुल्य था ।उनकी अनुपस्थिति में भी उनके मान की रक्षा का उन्होंने ध्यान रखा। जब हनुमान जी रावण की लंका को जलाकर सीता से दुबारा मिलने के लिए पहुँचे तो सीता ने कहा पुत्र हमें यहाँ से ले चलो तो रावण ने कहा माता मैं आपको यहाँ से ले जा सकता हूँ पर मैं नहीं चाहता कि यहां से चोरी करके ले जाऊँ।श्री राम जी रावण का वध करके आपको सम्मान सहित यहाँ से ले जाएंगे। इस प्रकार हनुमान जी में संकट के समय निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता थी ।

7-हनुमान जी में बौद्धिक कुशलता ,वफादारी और नेतृत्व की क्षमता थी। उद्दंड वानर सेना से कार्य निकलवाना हनुमान जी के वश की बात थी। राम- रावण के युद्ध के समय वानर सेना का संचालन प्रखरता से किया। यह हनुमान जी के विशिष्ट संगठनात्मक योग्यता का परिचायक है। सुग्रीव बाली के परस्पर संघर्ष के समय राम को बाली के वध के लिए राजी करना हनुमान जी की विनम्र चातुर्यता को दर्शाता है क्योंकि वे जानते थे कि सुग्रीव ही राम की सहायता कर सकते हैं । इस तरह हनुमान जी ने बुद्धि कौशल की चतुराई से इस कार्य को सुगम बनाया ।

8-हनुमान जी की मित्र के प्रति वफादारी और आदर्श स्वामि भक्त प्रशंसा के योग्य है। सीता जी का जब समाचार लेकर हनुमान जी राम के पास पहुँचे तो हनुमान जी ने अपने पराक्रम का कोई वर्णन नहीं किया। यह उनका बड़प्पन था कि वह सारा श्रेय प्रभु श्री राम को ही दे रहे थे। श्रीराम जी ने हनुमान से जब लंका यात्रा वृतांत पूछा? तो? हनुमान जी ने जो कुछ कहा उससे श्रीराम जी आत्म मुग्धता? विहीन व्यक्तित्व के कायल हो गए थे। ता कहूं प्रभु कछु अगम नहीं जापर तुम अनुकूल तब प्रभाव बड़वानलहिं जाहि सकहु खलु? तूल असंभव कार्य में भी हनुमान जी ने विजय प्राप्त की लेकिन हनुमानजी सफलता का श्रेय हमेशा श्री राम को ही देते थे।

सो सब तव प्रताप रघुराई कहकर अपने स्वामी को समर्पित किया। पूरी मेहनत करना पर श्रेय की इच्छा न रखना सेवक का देव दुर्लभ गुण होता है। जो उसे सदुण का उपहार देता है ।भगवान राम और हनुमान के पावन रिश्ते को कौन नहीं जानता है। राम के प्रति भक्ति भावना के लिए हनुमान ने अपना पूरा जीवन त्याग मय कर दिया था।

इस प्रकार हनुमान का चरित्र अतुलित पराक्रमी, ज्ञान और शक्ति के बाद भी अहंकार से विहीन था जो विषमताओं से भरे हुए संसार सागर में हमारा मार्गदर्शन करता है। आज की युवा पीढ़ी को हनुमान के चरित्र से सीख लेने की सख्त जरूरत है।

जीवन में आत्मसात करने के लिए बना है शिव चरित्र

आधुनिक युग के आदर्श नेतृत्वकर्ता शिवाजी महाराज

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत हनुमान को पौराणिक आदर्श और शिवाजी महाराज को आधुनिक आदर्श मानते हैं. संघ प्रमुख ने हाल में नागपुर में शिवाजी पर सुमंत टेकाडे द्वारा लिखित पुस्तक युगंधर शिवराय का विमोचन करते हुए कहा कि शिवाजी महाराज हमेशा ही राष्ट्र और समाज के हित में कार्यरत रहे जो उन्हें आधुनिक युग में एक आदर्श नेतृत्वकर्ता बनाता है. संघ प्रमुख ने कहा कि शिवाजी न केवल वीर योद्धा थे अपितु कुशल रणनीतिकार और सुशासन के प्रतीक भी थे . 17 वीं सदी में मराठा साम्राज्य की स्थापना करने वाले शिवाजी ऐसे प्रथम योद्धा थे जिन्होंने विदेशी आक्रमणों के खिलाफ मजबूत समाधान दिया. भारत में लगातार युद्धों में हारने का दौर सिकंदर के समय शुरू हुआ और इस्लाम फैलाने के नाम होने वाले हमलों तक जारी रहा.इन हमलों से भारत की व्यवस्थाओं को नष्ट किया जाता रहा. इस समस्या का समाधान खोजने में विजय नगर और राजस्थान के शासक भी असफल रहे . 17 वीं शताब्दी में जब शिवाजी महाराज ने मराठा साम्राज्य की स्थापना की तब यह सिलसिला समाप्त हुआ. उन्होंने इस चक्र को तोड़ा और अपनी रणनीति से आत्मरक्षा की नई दिशा दी इसीलिए उन्हें युगपुरुष कहा जाता है.

संघ प्रमुख ने शिवाजी महाराज को युगपुरुष बताते हुए कहा कि उन्होंने मुगल आक्रमण सहित देश में निरंतर हो रहे हमलों को रोकने का काम किया.शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के बाद विदेशी आक्रमणकारियों के युग का अंत होने लगा. संघ प्रमुख ने कहा कि शिवाजी को औरंगजेब ने आगरा में जहां कैद कर रखा था वहां से भाग कर उन्होंने अपने वे सभी इलाके मुक्त करा लिए जो शांति समझौते के तहत छोड़ने पर उन्होंने सहमति जताई थी. शिवाजी ने सभी खोए हुए इलाके जीत कर उन पर अपना आधिपत्य स्थापित किया. संघ प्रमुख ने कहा कि शिवाजी के संघर्ष से प्रेरित होकर बुंदेलखंड में छत्रसाल, राजस्थान में दुर्गा दास के नेतृत्व में राजपूत शासक और बिहार में चक्र ध्वज सिंह ने मुगल शासकों को पीछे धकेलना शुरू किया. संघ प्रमुख ने कि शिवाजी महाराज से प्रभावित होकर चक्र ध्वजसिंह ने एक अन्य राजा को पत्र लिखकर शिवाजी महाराज को आदर्श मानने और उनकी रणनीतियों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया था. संघ प्रमुख ने कहा कि शिवाजी महाराज की प्रेरणा आज भी प्रासंगिक है. स्वामी विवेकानंद और रवींद्र नाथ टैगोर सदृश महान व्यक्तित्वों ने भी उनसे प्रेरणा ली . संघ प्रमुख ने कहा कि दक्षिण भारत में एक अभिनेता ने शिवाजी महाराज पर केंद्रित एक फिल्म में काम किया था. उसके बाद उनका नाम गणेशन से बदलकर शिवाजी गणेशन हो गया. संघ प्रमुख ने कहा कि संघ व्यक्ति पूजा में विश्वास नहीं रखता लेकिन यदि भौतिक रूप में आदर्श मानना हो तो पौराणिक काल में हनुमानजी एवं आधुनिक काल में शिवाजी महाराज हमारे आदर्श रहे हैं. आते हैं

संघ प्रमुख ने कहा कि शिवचरित्र लोगों के मनोरंजन के लिए नहीं बना है वरन् शिवाजी महाराज का आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए बना है. मोहन भागवत ने कहा कि जब स्व . डॉ सुमंत टेकाडे ने जब छत्रपति शिवाजी का अध्ययन किया तो वे शिवचरित्र से पूर्णतः एकाकार हो गये थे इसीलिए जब वे शिवचरित्र की कथा सुनाते तो उनके शब्द सीधे श्रोताओं के हृदय को झकझोरते थे . उनके मगन-मस्तिष्क को प्रभावित करते थे. संघ प्रमुख ने अपनी इस बात को रेखांकित किया कि वक्ता के भाषण पर ताली बजाने अथवा लेखक की पुस्तक की प्रशंसा होने से वक्ता अथवा लेखक की सफलता का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता . उनके विचारों से जब लोग कार्य के प्रवृत्त हो जाते हैं उसी में लेखक के सृजन की सार्थकता है. शिवचरित्र हमें सतत संघर्ष की प्रेरणा देता है इसीलिए शिवाजी महाराज को युग प्रवर्तक ,युगंधर और युगपुरुष कहा जाता है. एक व्यक्ति और राजा के रूप में शिवाजी महाराज का चरित्र अनुकरणीय है.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

रेपो दर घटाकर कर्जदारों को राहत

रिजर्व बैंक ने रेपो दर में पुनः 0.25 प्रतिशत कटौती कर चालू वर्ष में कर्जदारों को दूसरी बार राहत दी है. महंगाई पर नियंत्रण कर विकास को गति देने का इसके पीछे उद्देश्य है. गत 2 वर्षों में ऊंचाई पर गई ब्याज दर के अब धीरे-धीरे नीचे आने के आसार हैं. यद्यपि यह निर्णय कर्जदारों के लिए अच्छा है, लेकिन फिक्स डिपाजिट से मिलने वाली आय पर निर्भर लोगों के लिए नुकसानदेह है. रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने रेपो दर कटौती की घोषणा के साथ जीडीपी पर जो टिप्पणी की है, वह महत्वपूर्ण है. इस समय चल रही वैश्विक अनिश्चितता की वजह से जीडीपी 6.5 फीसदी रहने का अनुमान है. पहले यह 6.7 फीसदी रहने का अनुमान लगाया गया था. नीतिगत बदलाव और विश्व व्यापार में बढ़ते जोखिम की वजह से जीडीपी में वृद्धि की दर कम रह सकती है. यह अनिश्चितता लंबे समय तक कायम रह सकती है, जिसका भारत पर प्रभाव पड़ेगा. शहरी ग्राहकों के खर्च में वृद्धि होने से मांग भी मजबूत हुई है. हाल के कुछ महीनों में खुदरा महंगाई दर में गिरावट आई है. खाद्यान्न कीमतों में आई गिरावट की वजह से जनवरी और फरवरी महीने में दाम स्थिर रखने में मदद मिली है. अमेरिका व चीन के बीच चल रहे व्यापार युद्ध की वजह से वैश्विक मंदी की आशंका बढ़ी है. कमोडिटी और कच्चे तेल की कीमतें और नीचे जा सकती हैं. मंदी आने पर उसका असर देश के विकास पर भी पड़ेगा. ब्याज दर कम किए जाने से नए सिरे से कर्ज लेने वालों की तादाद बढ़ सकती हैं. जिन ग्राहकों और उद्योगों ने पहले ही कर्ज ले रखा है, उन्हें राहत मिलेगी. लेकिन बैंक जमाकर्ताओं को ब्याज दर घटने से निराशा होगी. रेपो दर घटाकर 6 प्रतिशत किए जाने से मकान, वाहन सहित विभिन्न कर्जों पर मासिक किस्त (ईएमआई) में कमी आने की उम्मीद है. रिजर्व बैंक ने अमेरिका के जवाबी शुल्क (टैरिफ) को लेकर चिंता के बीच अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के उद्देश्य से रेपो दर में कटौती की है. रेपो वह ब्याज दर है, जिस पर कमर्शियल बैंक अपनी तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिए रिजर्व बैंक से कर्ज लेते हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

चर्चा सरगर्म है इस समय राजनीति से आरबीआई तक संजय

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, आज हम आपसे किसी अजय, प्रणय, विजय, तनय, धनंजय या शत्रुंजय की चर्चा नहीं करेंगे, बल्कि संजय के बारे में आपकी राय जानना चाहेंगे. हजारों वर्ष पुराना यह नाम अचानक चर्चित हो उठा है. जरूर इस नाम के साथ कोई चमत्कार जुड़ा हुआ है और सारी दुनिया चमत्कार को नमस्कार करती है.

हमने कहा, राजनीति में संजय गांधी किसी धूमकेतु के समान आए थे. इमरजेंसी के दौरान उनका दबदबा था. फिल्म में संजय दत्त और संजय कपूर के नाम से लोग परिचित हैं. एक चरित्र अभिनेता का नाम संजय मिश्रा है. आपको पत्रकार और पुलिस जगत में भी संजय मिल जाएंगे. भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर का नाम संजय मल्होत्रा है. वैसे आपको विजय पर चर्चा करनी चाहिए. क्योंकि जंजीर, दीवार, त्रिशूल, डॉन जैसी अधिकांश फिल्मों में अमिताभ बच्चन का नाम विजय रहा करता है. फिल्म अग्निपथ में वह कहते हैं- नाम विजय दीनानाथ चव्हाण. पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, विषय बदलने की

कोशिश मत कीजिए. आज की चर्चा का मुद्दा सिर्फ संजय पर केंद्रित रखिए. इस नाम के लोग बुद्धिमान, कर्तव्यपरायण, चतुर-चालाक, स्मार्ट और प्रैक्टिकल हुआ करते हैं. अब यह बताइए कि इतिहास में सबसे पहले इस नाम का उल्लेख कहां है?

हमने कहा, महाभारत युद्ध के हर मोर्चे का आंखों देखा हाल संजय ने धृतराष्ट्र को सुनाया था. यदि नारदजी दुनिया के पहले पत्रकार थे और देवता-दानवों और ऋषि-मुनियों तक संवाद प्रेषण या मास कम्युनिकेशन करते थे, तो संजय भी दुनिया के पहले लाइव कमेंटेटर थे. श्रीमद् भगवत गीता का प्रथम अध्याय ही धृतराष्ट्र के इस कथन से शुरू होता है- धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः मामकाः पांडवाश्चैव किम कुर्वत संजय. हे संजय धर्म भूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए मेरे और पांडू के पुत्रों ने क्या किया?

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि मैं संजय हूं, लेकिन महाभारत का संजय नहीं, जो भविष्य में ब्याज दरों में होनेवाले बदलाव और मौजूदा वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच ब्याज दरों में होनेवाली कटौती के बारे में भविष्यवाणी कर सकूं.

हमने कहा, अब राजनीति के मुद्दे पर आइए. ठाकरे गुट के सांसद संजय राऊत ने महाभारत के पात्र का उल्लेख करते हुए उद्धव ठाकरे को श्रीकृष्ण की उपमा दी थी और खुद को संजय बताया था. इस पर शिंदे गुट के नेता और पूर्व विधायक शहाजी बापू पाटिल ने राऊत के अज्ञान पर जोरदार हमला करते हुए कहा कि संजय कभी भी श्रीकृष्ण के साथ नहीं था, वह धृतराष्ट्र के साथ था. संजय राऊत को फिर से महाभारत ठीक से पढ़ना चाहिए.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11870 - डॉ. सागर खादीवाला

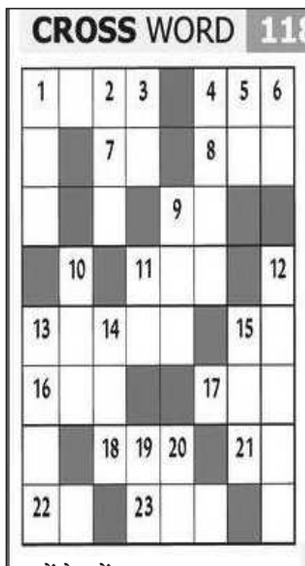

1. वियोग, बिलगाव 2. मगध देश का, जरासंध का एक नाम 3. गंदे पानी के बहने का मार्ग 4. जिसमें भार न हो 5. समय, काल, अवसर 6. किसी मंत्र नाम, या वाक्य का बार-बार किया जाने वाला उच्चारण. 9. कांख, पास की जगह 10. चांदी के समान सफेद हलकी तथा कम मूल्य की धातु. 11. दुख, शोक 12. वह शास्त्र जिसमें मन की प्रकृति प्रवृत्ति तथा मन किस प्रकार काम करता है इन सब बातों का विवेचन होता है 13. बढ़ना, उन्नति करना, उपजना 14. लेखनी 15. जलाने की क्रिया या भाव, ईंधन 19. सब्ज 20. कोठरी, कमरा

बायें से दायें

1. अर्थदंड, दंडस्वरूप दिया गया धन 4. भाभी 7. कंठ, ग्रीवा 8. राक्षस, रक्त पीने वाला 9. हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक 11. आकाश, एक छप्पय छंद 13. नीले रंग का कमल 15. प्राण, ज्ञान 16. पर्दा, घुंघट, लकड़ी का पटरा 17. एक प्रकार की लंबी टांगों वाला बड़ा पक्षी 18. गंध, बास, बू 21. वह मानसिक अवस्था जो शराब आदि पीने से होती है. 22. इजारबंद, नीवी 23. दैत्य, असुर

ऊपर से नीचे

Solution 11869

ज	ल	प्र	वा	ह		प	ल
ग	ट	क	ना		भ	ती	जा
म		ट		च		ला	ना
ग	ल	ना		रि	पु		
	ड़		प	त्र	का	रि	ता
ल	ख	ल	खा		र	क्त	प
स	ड़ा		र	ट	ना		मा
	ना	ट	ना			दा	न

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफलता प्राप्त होगी. व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा. वर्ष के मध्य में सत्ता सुख प्राप्त होगा. स्थाई लाभ का योग है. वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. अत्याधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी. अधिकारी वर्ग से मतभेद हो सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य सेमन अशांत रहेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम से सफलता मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारों मेंवृद्धि होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मतभेद हो सकता है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सौभाग्यशाली, भाग्यवर्धक, सुन्दर, तथा शांतिप्रिय होगा, आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, जन्म स्थान के पास अपना भाग्योदय करेगा, पिता के प्रति आस्था रहेगी, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

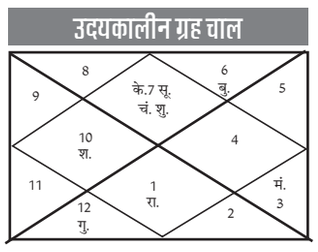

पंचांग

रा.मि. 22 संवत् 2082 चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शनिवासरे रातअंत 4/27, हस्त नक्षत्रे शाम 5/13, व्याघात योगे रात 7/56, विष्टि करणे सू.उ. 5/44 सू.अ. 6/16, चन्द्रचार कन्या, पर्व- स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, चांदी के भाव में तेजी के रियेक्शान रहेंगे, पीले रंग की वस्तुओं में तेजी होगी. हल्दी, गुड़, सोना, में तेजी होगी, वायदा विचार आज 2 बजकर 9 मिनिट से 15 मिनिट के अन्दर तेजी के रूख पर व्यापार करना लाभकारी रहेगा. भाग्यांक 2585 है.

मेष- बिना मांगे राय न दें, अपमान हो सकता है, नई योजना हाथ में आने के आसार हैं, भूमि भवन, मकान आदि संबंधित विवादों का समाधान होगा.

वृषभ- उच्च अध्ययन पर अंतिम निर्णय होगा, यात्रा सुखद रहेगी, मित्र मदद करेंगे, मांगलिक यात्रा का प्रोग्राम बनेगा, राजनैतिक प्रभाव में वृद्धि होगी.

मिथुन- मौजमस्ती में समय व्यतीत होगा, तीखी बातों से बचें, सोच समझकर पूँजी निवेश करें, आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी, संतान के कार्य बनेंगे.

कर्क- संवाद बनाये रखें, रिश्ते मजबत होंगे, मित्रों के सहयोग से कार्य प्रारंभ किया जा सकता है, जमीन जायजाद मिलने का योग है, मांगलिक कार्यों में खर्च होगा.

सिंह- भावुकता में लिये गये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, अधिकारियों का सहयोग तरक्की में सहायक रहेगा, विवादों को टालना हितकर रहेगा.

कन्या- कानूनी मामले पक्ष में हल होंगे, रोजगार के अवसर की तलाश पूरी होगी, शारीरिक अस्वस्थ्यता के कारण व्यवधान आ सकता है.

तुला- सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी, मांगलिक यात्रा का प्रोग्राम बनेगा, लाभ होगा. मित्रों से विवाद होगा, कामकाज पूरा होगा.

वृश्चिक- नये प्रस्ताव मिलने के आसार हैं, भावनात्मक सम्बन्धों में निकटता बढ़ेगी, पारिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

धनु- न्यायालयीन प्रयासों में सफलता मिलेगी, नवीन योजनाओं का विकास होगा, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

मकर- बुजुर्गों का ध्यान रखें, शासन सत्ता एवं उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा, मित्र वर्ग मदद करेंगे, आशा से अधिक लाभ प्रसन्नता देगा.

कुम्भ- साहसिक प्रयत्न से शत्रुओं पर विजय मिलेगी, नौकरी में यश एवं कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा, परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा.

मीन- कारोबारी विस्तार की संभावना है, दान धर्म में खर्च होगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें, साहस पराक्रम बना रहेगा.

SUDOKU 7002

4					1	9		
						8	5	
			7	3				
			3				4	7
9								2
8	5				6			
				5	8			
	7	4						
		6	2					5

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी ओर खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7001

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1